बाइसन जनसंख्या को रिवाइव करने हेतु अध्ययन

चर्चा में क्यों?

हाल ही में **झारखंड** वन विभाग ने [पलामू टाइगर रिज़र्व (PTR)](#) **में** [बाइसन](#) (जिसे आमतौर पर गौर के नाम से जाना जाता है) **की घटती संख्या को रिवाइव (पुनर्जीवित) करने के लिये एक अध्ययन शुरू किया।**

मुख्य बिंदु

- **झारखंड में बाइसन जनसंख्या की स्थिति:**
  - बाइसन, जो बड़ी बिल्लियों के लिये एक महत्त्वपूर्ण भोजन स्रोत है, पलामू टाइगर रिज़र्व (PTR) को छोड़कर **पूरे झारखंड में विलुप्त हो चुका है।**
  - PTR में वर्तमान **बाइसन की जनसंख्या 50 से 70 के बीच है, जो** 1970 के दशक की तुलना में काफी कम है, जब यह लगभग 150 थी।
- **गिरावट के कारण:**
  - प्रमुख कारकों में **अवैध शिकार, संक्रमण और** स्थानीय मवेशियों के कारण आवास में गड़बड़ी शामिल हैं।
  - 1.5 लाख से अधिक पालतू मवेशी बाइसन के निवास स्थान पर अधिकार कर लेते हैं, उनके आहार का सेवन करते हैं और [मुँह और खुरपका रोग](#) जैसे संक्रामक रोगों का प्रसार करते हैं।
- **वर्तमान संरक्षण प्रयास:**
  - PTR प्राधिकरण ने **बाइसन के अस्तित्व को प्रभावित करने वाले कारकों का आकलन करने के लिये एक अध्ययन शुरू किया है,** जिसमें आवास सुधार और घास प्रजातियों की प्राथमिकताएँ शामिल हैं।
    - अध्ययन के बाद एक व्यापक पुनरुद्धार योजना बनाई जाएगी।
  - बीमारियों के प्रसार को रोकने के लिये, आसपास के 190 गांवों के **1.5 लाख घरेलू मवेशियों को टीका लगाने का टीकाकरण अभियान चलाया जा रहा है।**
  - चरागाह सुधार और अवैध शिकार विरोधी उपायों को भी मजबूत किया जा रहा है।
- **कोर और बफर ज़ोन प्रबंधन:**
  - PTR 1,129.93 वर्ग किलोमीटर में विस्तृत है, जिसमें से 414.08 वर्ग किलोमीटर को कोर (महत्त्वपूर्ण [बाघ](#) आवास) और 715.85 वर्ग किलोमीटर को बफर ज़ोन घोषित किया गया है।
  - [बेतला राष्ट्रीय उद्यान](#) PTR के 226.32 वर्ग किमी क्षेत्र में विस्तृत है, जिसमें से 53 वर्ग किमी. क्षेत्र बफर ज़ोन में पर्यटकों के लिये खुला है।
  - **मुख्य पर्यावासों की सुरक्षा के लिये PTR सीमा के भीतर 34 गाँवों में से आठ को स्थानांतरित करने** के प्रयास चल रहे हैं।

बाइसन

[//](#)

- परिचय:
  - भारतीय बाइसन या गौर (बोस गौरस) भारत में पाई जाने वाली जंगली मवेशियों की सबसे लंबी प्रजाति है और सबसे बड़ा मौजूदा गोजातीय पशु है।
  - विश्व में गौर की संख्या लगभग 13,000 से 30,000 है, जिनमें से लगभग 85% जनसंख्या भारत में मौजूद है।
    - फरवरी 2020 में नीलगिरि वन प्रभाग में भारतीय गौर की पहली जनसंख्या आकलन प्रक्रिया के तहत अनुमान लगाया गया था कि प्रभाग में लगभग 2,000 भारतीय गौर निवास करते हैं।
- भूगोल:
  - इसका मूल स्थान दक्षिण और दक्षिण-पूर्व एशिया है।
  - भारत में, वे पश्चिमी घाटों में बहुत अधिक प्रचलित हैं।
    - वे मुख्य रूप से नागरहोल राष्ट्रीय उद्यान, बांदीपुर राष्ट्रीय उद्यान, मसनिगुडी राष्ट्रीय उद्यान और बिलिगिरिरिंगना हिल्स (BR हिल्स) में पाए जाते हैं।
  - यह बर्मा और थाईलैंड में भी पाया जाता है।
- प्राकृतिक वास:
  - वे सदाबहार वनों और नम पर्णपाती वनों को पसंद करते हैं।
  - वे हिमालय में 6,000 फीट से अधिक ऊंचाई पर नहीं पाए जाते हैं।
- संरक्षण की स्थिति:
  - IUCN रेड लिस्ट में असुरक्षित।
  - वन्य जीव संरक्षण अधिनियम, 1972 की अनुसूची I में शामिल।

h

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/study-to-revive-bison-population